

अक्रम एकराप्रेस



अक्रम लैब

संपादकीय

बालमित्रों,

वैज्ञानिक यानी सुपर डिटेक्टिव! वे हमेशा जिज्ञासु बनकर नई-नई खोज करते हैं और प्रॉब्लम्स सॉल्व करते हैं। वे प्रयोग करते हैं, अवलोकन करते हैं और फिर निष्कर्ष प्राप्त करते हैं। एक वैज्ञानिक कभी भी नई-नई खोज करना या सीखना नहीं छोड़ता।

तो आइए, इस अंक में हम भी वैज्ञानिक बनकर प्रयोग करें और हर प्रयोग से कुछ नए निष्कर्ष निकालें, अक्रम साइन्स के तरीके से। ये निष्कर्ष हमें लाइफ में अलग-अलग जगहों पर मददगार साबित होंगे।

चलो, अपना लैब-कोट और चश्मा पहनकर, वैज्ञानिक बन जाओ और प्रयोग करने के लिए हो जाओ तैयार!

- डिम्पल मेहता



अक्रम
एक्सप्रेस

November, 2025
Year 13, Issue : 08
Conti. Issue No.: 152
Published Monthly

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदि संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२९, गुजरात
फोन: ९३२८६६९९६६/७७
Email: akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor: Dimple Mehta
Published by Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421.
Taluka & Dist.- Gandhinagar.

© 2025, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

Price Per Copy: NIL

2 November 2025



एक्सपेरिमेंट 9



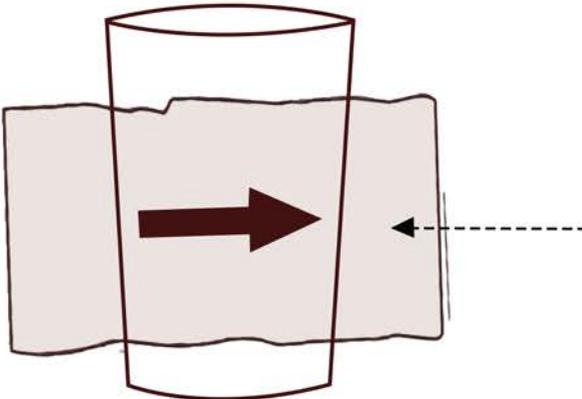
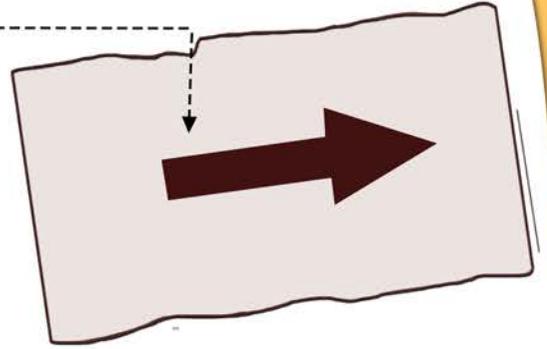
आवश्यक सामग्री :

- काँच का पारदर्शक ग्लास
- पानी
- कागज़ का टुकड़ा
- पेन



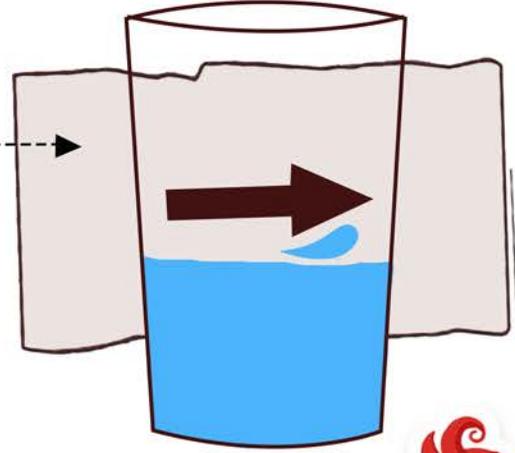
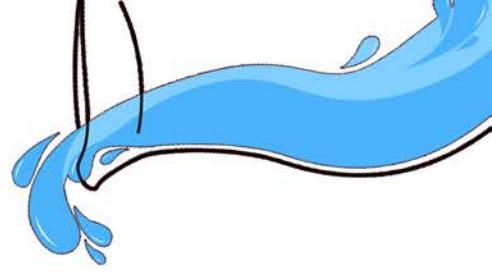
प्रक्रिया :

1. कागज़ के टुकड़े पर दाहिनी ओर संकेत करता हुआ एक बड़ा तीर (→) बनाएँ। तीर वाले कागज़ को एक टेबल अथवा किसी भी समतल सतह पर रखें।



2. काँच के खाली ग्लास के पीछे कागज़ को इस तरह रखें कि आपको ग्लास में से तीर दिखाई दे।

3. धीरे- धीरे ग्लास में पानी भरें।



अवलोकन :

ग्लास में पानी भरने के बाद क्या हुआ?

हिन्ट : ग्लास में पानी भरने के बाद तीर किस ओर संकेत करता हुआ दिखाई देता है?

प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से बच्चों को विज्ञान के मूल सिद्धांतों से परिचित कराया जाता है। प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से बच्चों को विज्ञान के मूल सिद्धांतों से परिचित कराया जाता है।



अक्रम साइन्स

कहता है कि :

मान लो कि,

- कागज़ पर बनाया गया तीर - हमारे फ्रेंड्स, टीचर्स, परिवार आदि
- काँच का खाली ग्लास - हमारी शुद्ध दृष्टि
- पानी - हमारी नेगेटिव दृष्टि
- प्रयोग देखने वाले - हम

हम जिससे अपनी आस-पास की दुनिया को देखते हैं वही हमारी दृष्टि है। जब काँच का ग्लास खाली था, यानी हमारी दृष्टि शुद्ध थी तो हमें सब कुछ सीधा दिखाई देता था।

लेकिन जब ग्लास में पानी भरा गया, यानी हमारी दृष्टि नेगेटिव हो गई, तो सीधी चीज़ें भी हमें उल्टी दिखने लगी। इसी तरह कभी-कभी हमें अपने फ्रेंड्स, टीचर्स, भाई-बहन या मम्मी-पापा का नेगेटिव दिखाई देता है लेकिन वास्तव में उनमें कुछ नेगेटिव होता ही नहीं। हमारी दृष्टि नेगेटिव हो गई होती है।

तो चलो, नेगेटिव दृष्टि हटाकर शुद्ध दृष्टि से देखें, पॉज़िटिव देखें।

पॉज़िटिव देखने से भीतर बहुत शांति रहती है। नेगेटिव हमेशा भोगवटा(दुःख) देता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मुझे पॉज़िटिव नहीं दिखाई देता है।

पूज्यश्री : हमारा चश्मा टेढ़ा है इसीलिए हमें दिखाई नहीं देता। जाँच ही कहाँ की है कि ऐसा है या नहीं? अभिप्राय दे दिया कि ये लोग ऐसे ही हैं। हमें अवलोकन करना चाहिए, ऑब्ज़र्वेशन। ऑब्ज़र्वेशन करेंगे तो पॉज़िटिव दिखेगा। लेकिन हमें अभिप्राय नहीं देना चाहिए कि इसमें पॉज़िटिव है ही नहीं, नेगेटिव ही है।



**ज्ञानी
कहते हैं...**

उसने दस बार हेल्प न की हो लेकिन एक बार हेल्प की हो, तो दस बार को साइड में रख देना और कहना कि नहीं, बहुत अच्छे हैं। पॉज़िटिव ढूँढ़ निकालो उनके लिए। ऐसा करते-करते पॉज़िटिव से नेगेटिव को जीरो कर दो। कर पाओगे?

यदि मैं आपके लिए गलत सोचता रहूँ, तो आप जितनी भी बार मुझे मिलोगे तो आपको मेरे साथ बात करना अच्छा ही नहीं लगेगा। क्यों? क्योंकि मेरे नेगेटिव अभिप्राय आपको भोगवटा(दुःख) देंगे।

दोष देखा हो तो उसका प्रतिक्रमण करना। तो हम शुद्ध हो जाएँगे और दोष धुल जाएगा।

एक्सपेरिमेंट ३

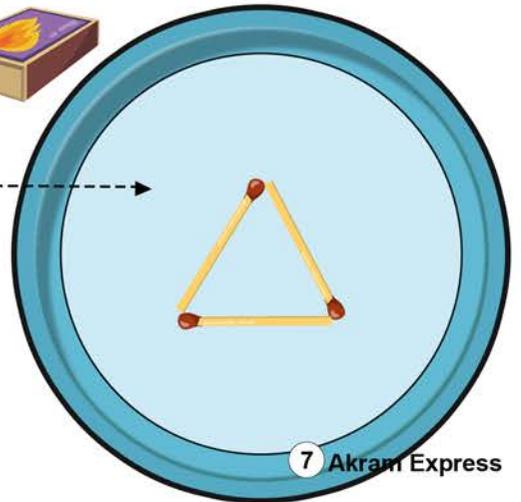
आवश्यक सामग्री :

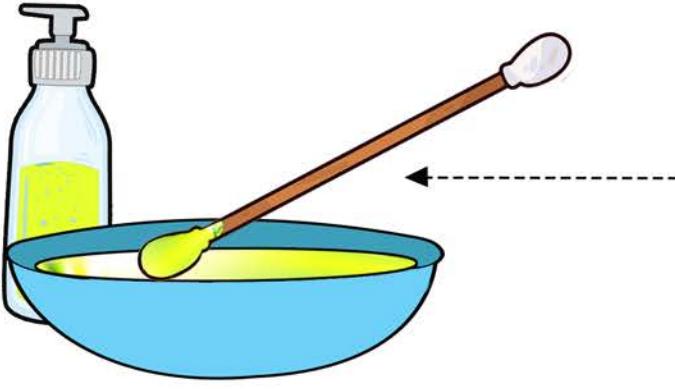
- डिश या बाउल (कटोरा)
- पानी
- मैचस्टिक - ३
- डिशवॉशिंग लिक्विड (डिश धोने का साबुन) - ४-५ बूँदें
- कॉटन बड्स (पिक्चर के अनुसार)

प्रक्रिया :

1. एक डिश या बाउल में थोड़ा पानी डालें।

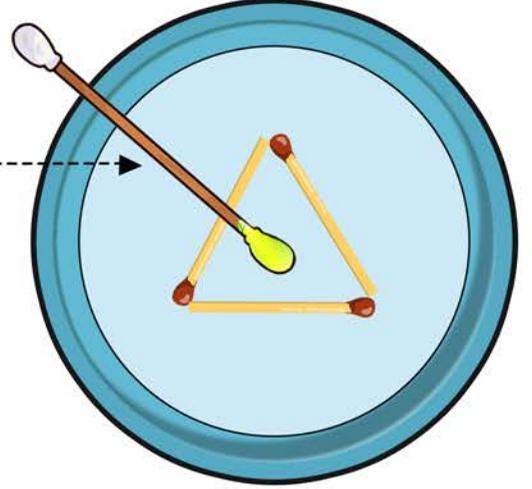
2. पानी में तीन मैचस्टिक्स को त्रिकोण के आकार में रखें।





3. कॉटन बड्स के सिरे को डिशवॉशिंग लिक्विड में डुबाएँ।

4. अब धीरे से कॉटन बड्स के सिरे से पानी के मध्य भाग में टच करें।



अवलोकन :

कॉटन बड्स टच करने पर क्या हुआ?

!गिग्राह लिड फू सि स्रुह नडॉक स्रुड्रीर्ग निति : बावह

अक्रम साइन्स

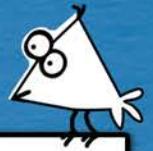
कहता है कि :



मान लो कि,

- पानी - हमारी दुनिया
- मैचस्टिक्स - हमारे फ्रेंड्स
- कॉटन बड्स - हम
- डिशवॉशिंग लिक्विड - हमारे रूठने की आदत

हमें फ्रेंड्स के साथ कितना मज़ा आता है! लेकिन जब हम बार-बार उनसे रूठते हैं तो क्या होता है? जैसे मैचस्टिक्स डिशवॉशिंग लिक्विड वाले कॉटन बड्स से दूर चली गईं, वैसे ही हमारे फ्रेंड्स भी हमसे दूर भागते हैं।



तो अब हम अपनी रूठने की आदत से दूर ही रहेंगे।
जिससे हमारे प्यारे फ्रेंड्स हमसे दूर न भागें।

रूठने से क्या होता है?

मैं खेलने आ गया हूँ।

हाय नीनो! एक राउन्ड तक इंतजार करो ओ.के?

हमेशा मुझे ही इंतजार करना पड़ता है। मुझे नहीं खेलना आप लोगों के साथ।

सब मेरे बिना मजे कर रहे हैं?

अब मैं इस राउन्ड में
बाहर बैठती हूँ। नीनो
को बुलाएँ?

नहीं, उसे मत
बुलाओ। वह हमेशा
रूठ जाता है।



हाँ, हाँ...
उसे नहीं!



रूठने के कारण नीनो गेम नहीं खेल पाया और फ्रेंड्स भी
उससे दूर चले गए। नुकसान ही नुकसान हुआ!

एक्सपेरिमेंट ३



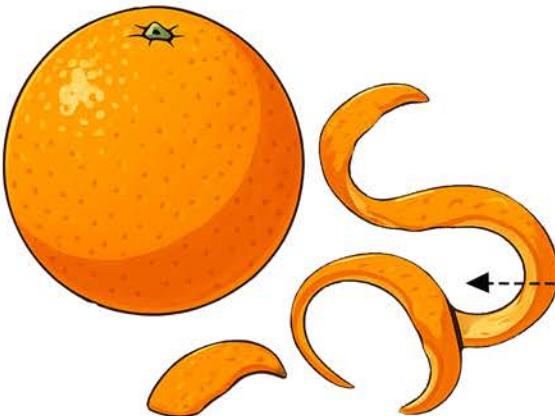
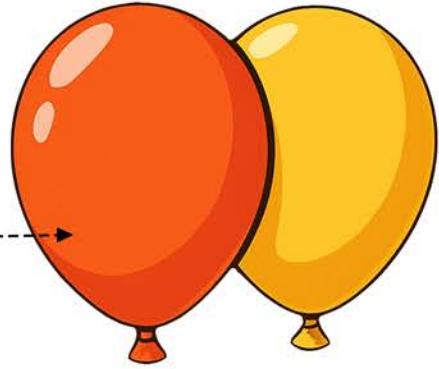
आवश्यक सामग्री :

- दो गुब्बारे
- एक संतरे



प्रक्रिया :

1. २ गुब्बारे फुलाएँ।



2. संतरे को छीलकर उसके छिलके को साइड में रखें।

अक्रम साइन्स

कहता है कि :



मान लो कि,

- संतरे के छिलके - हमारी शिकायतें
- गुब्बारा - हमारे मम्मी-पापा का दिल

जिस तरह संतरे के छिलके के एसिड से गुब्बारा फूट जाता है, उसी तरह हमारी शिकायतों से मम्मी-पापा का दिल भी टूट जाता है। मम्मी-पापा हमारे लिए कितना कुछ करते हैं। फिर भी यदि हम शिकायत करते रहें तो उन्हें कितना दुःख होगा!



तो हम निश्चय करेंगे कि आज से हम हमेशा खुश रहेंगे और शिकायत करके मम्मी-पापा का दिल नहीं तोड़ेंगे।



शिकायत जार

‘आज फिर से सब्जी-रोटी? मैंने कहा था कि मुझे नूडल्स खाना है।’ आर्यन ने खाने की थाली को देखकर मुँह बिगाड़ते हुए कहा। ‘सॉरी बेटा। आज टाइम नहीं था। सन्डे को बना दूँगी।’ मम्मी ने प्रेम से

आर्यन को समझाया। लेकिन आर्यन नाराज़ हो गया। आर्यन की शिकायतों की लिस्ट हर रोज़ बढ़ती ही जा रही थी।

एक दिन आर्यन के रूम में दादी ने काँच का एक जार रखा। उस पर लिखा था, ‘शिकायत जार।’ यह देखकर आर्यन को आश्चर्य हुआ। वहीं पर एक चिट्ठी रखी हुई थी जिसमें लिखा था जब भी तुम शिकायत करो तो जार में एक सिक्का डालना। दादी ने आर्यन को सिक्के का एक छोटा पाउच भी दिया।

काँच का जार तीन दिनों में ही आधा भर गया। दादी ने कहा, ‘आर्यन जार भारी होता जा रहा है। और साथ-साथ मम्मी-पापा का दिल भी!’ आर्यन को दादी की बात समझ में नहीं आई।



उस शाम आर्यन लिविंग रूम में बैठकर होमवर्क कर रहा था। अचानक उसे खुद की ही आवाज़ सुनाई दी, 'मुझे जो चाहिए वो आप मुझे कभी नहीं दिलाते! आप मेरी बात कभी नहीं मानते।'



देखा तो दादी के फोन से आर्यन की आवाज़ आ रही थी। दादी ने आर्यन की आवाज़ रिकार्ड कर ली थी। अपनी आवाज़ सुनकर आर्यन चौंक गया। उसने धीरे से पूछा, 'दादी, मैं इस तरह बोलता हूँ? सुनकर मुझे ही दुःख हुआ।' दादी ने उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, 'तो मम्मी-पापा को कैसा लगता होगा? वे तुम्हारे लिए कितना कुछ करते हैं। लेकिन जब तुम शिकायत करते हो तो उनका दिल टूट जाता है। पता है?' आर्यन कुछ नहीं बोला।

दूसरे दिन आर्यन ने 'शिकायत जार' का नाम बदलकर 'थैंक यू जार' कर दिया। अब वह शिकायत करने के बजाय 'थैंक यू' कहता है। अगर

कोई सब्जी पसंद नहीं आती तो शिकायत करने के बजाय चिट्ठी में 'थैंक यू' लिखता है। 'आज मम्मी थक गई थी फिर भी उन्होंने खाना बनाया। थैंक यू मम्मी।' और वह चिट्ठी 'थैंक यू जार' में डाल देता है। अब आर्यन भी खुश रहता है और मम्मी-पापा भी!



एक्सपेरिमेंट ४

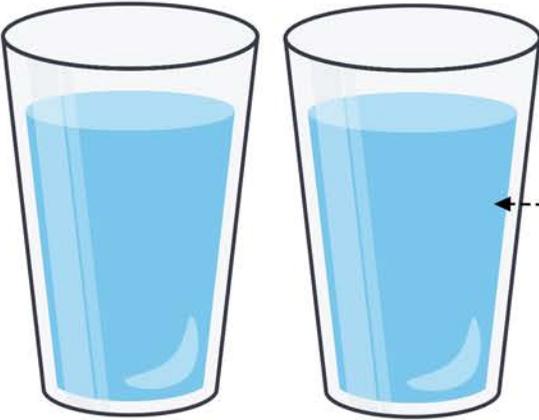


आवश्यक सामग्री :

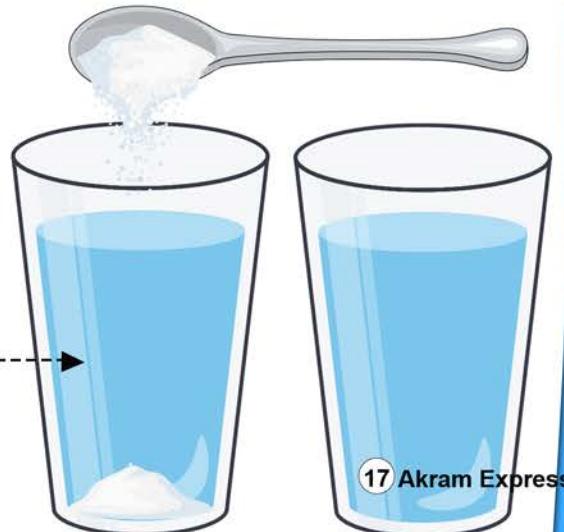
- काँच के दो पारदर्शक ग्लास
- पानी - 9 कप
- नमक - २-३ चम्मच
- फूड कलर्स - ४-५ बूँदे
- चम्मच

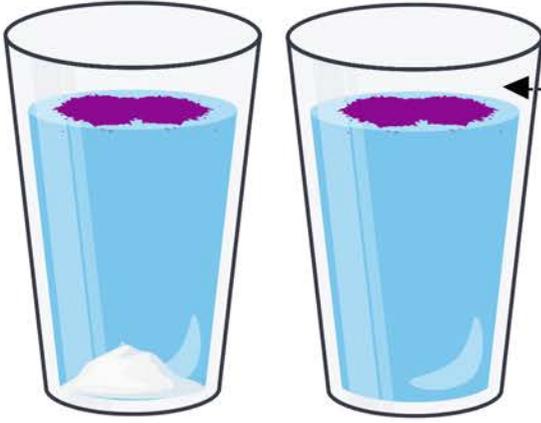
प्रक्रिया :

1. काँच के दो ग्लास में समान मात्रा में पानी भरें।



2. एक ग्लास में नमक डालकर चम्मच से हिलाएँ। दूसरे ग्लास में सादा पानी रहने दें।





3.

दोनों ग्लास में फूड कलर की कुछ बूँदे डालें और ध्यान से देखें।

अवलोकन :



क्या फूड कलर्स दोनों ग्लास में समान रूप से मिक्स हो गए?

।गिँगाह डि स्रमि डि त्रंरु सैलक इरु में निग शस : बावह
स्रमि प्रीध गिँरु निरु प्ररु सैलक इरु में निग निरु कसम कीवह
।।गर्गल प्रमस तहुड में निडि

अक्रम साइन्स

कहता है कि :



मान लो कि,

- पानी वाला काँच का ग्लास - हम
- फूड कलर्स - पढ़ाई
- नमक - टी.वी., इन्टरनेट आदि देखकर हमारे चित्त में जो कचरा भर जाता है वह।

सादे पानी में फूड कलर्स तुरंत ही मिक्स हो जाते हैं। उसी तरह हमारा चित्त शुद्ध हो तो पढ़ाई हमारे चित्त में धारण हो जाती है और हमें याद रहता है।

लेकिन यदि चित्त में हम, टी.वी., इन्टरनेट रूपी नमक मिक्स कर देंगे तो जैसे फूड कलर्स नमक वाले पानी में सतह पर तैरते रहते हैं और मिक्स नहीं हो सकते, उसी तरह पढ़ाई का भी हमें ऊपर-ऊपर से याद रहता है, लेकिन सही तरीके से धारण नहीं हो पाता।



हमारा चित्त शुद्ध हो तो पढ़ाई हमारे चित्त में धारण हो जाती है और हमें याद रहता है।

पढ़ाई में

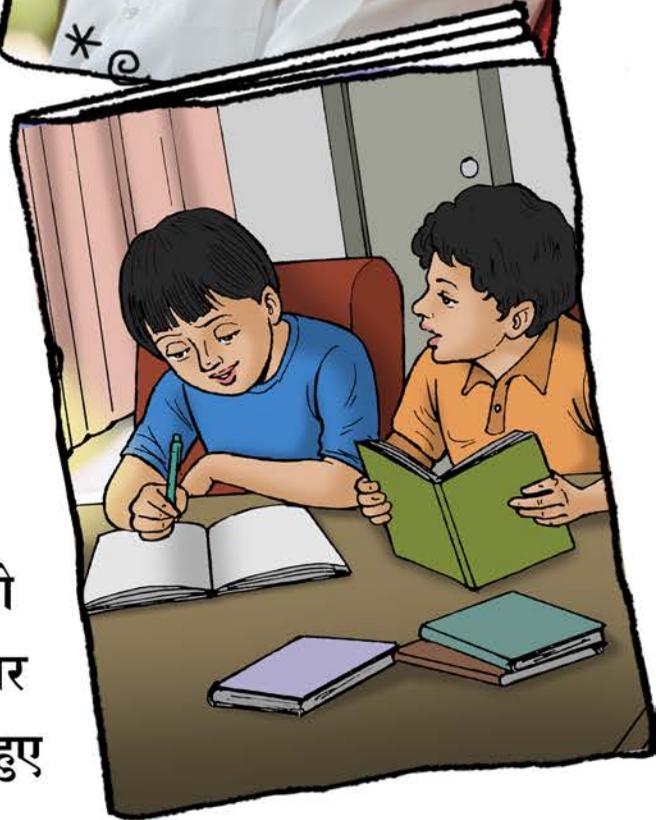
ग्रासिंग बढ़ाने के लिए क्या कर

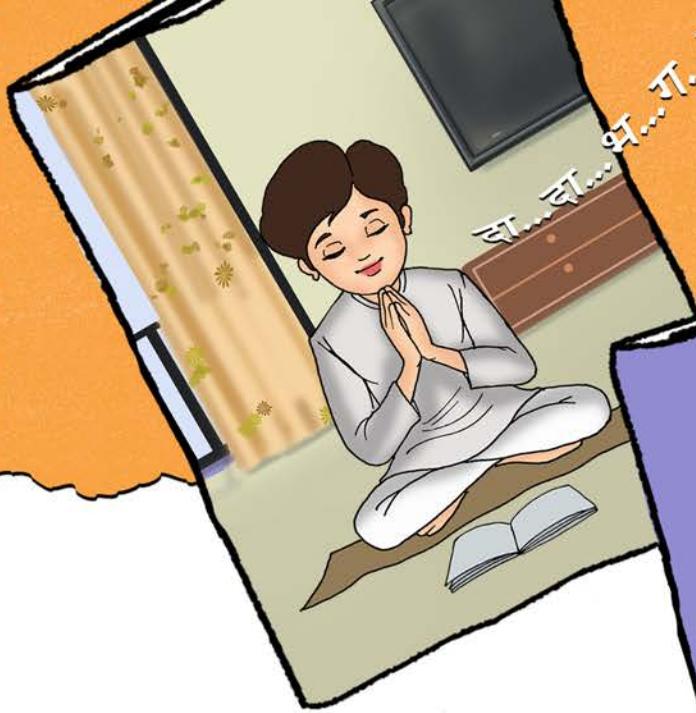
पूज्यश्री :

पहले तो पढ़ाई में इन्ट्रेस्ट पैदा करें कि इसका कितना महत्व है। पढ़ाई को फर्स्ट प्रायॉरिटी दें। यदि इन्ट्रेस्ट होगा तो यादशक्ति बढ़ेगी।

दूसरा, 'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो' बोलने से आपका चित्त शुद्ध होता जाएगा। शुद्ध चित्त जबरदस्त ग्रासिंग कर सकता है। एकाग्रता की शक्ति बढ़ती है, पढ़ाई में यादशक्ति बहुत बढ़ती जाती है।

आँखें बंद करके, कानों को सुनाई दे इस तरह, एक-एक अक्षर दा...दा...भ...ग...वा...न... पढ़ते हुए





७*

प्रार्थना

‘हे दादा भगवान! मैं जो भी पढ़ूँ वह मुझे याद रहे, ऐसी आप मुझे शक्ति दीजिए। मेरा चित्त पढ़ने में एकाग्र रहे ऐसी आप मुझे शक्ति दीजिए।’

दस मिनट ‘दादा भगवान के असीम जय जयकार हो’ करने से शक्ति बहुत बढ़ जाती है।

कई लोगों को ऐसे अनुभव हुए हैं कि पढ़ने से पहले दस मिनट इस तरह से असीम जय जयकार बोलते हैं, शक्ति माँगकर पढ़ते हैं कि ‘हे दादा भगवान! मैं जो भी पढ़ूँ वह मुझे याद रहे, ऐसी आप मुझे शक्ति दीजिए। मेरा चित्त पढ़ने में एकाग्र रहे ऐसी आप मुझे शक्ति दीजिए।’ फिर उसका परिणाम यह आता है कि पहले उसे अट्ठावन प्रतिशत आते थे तो अब अठहत्तर प्रतिशत आते हैं। बीस प्रतिशत रिज़ल्ट बढ़ जाता है।

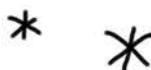
पढ़ाई में बेहतर रिज़ल्ट चाहते हो तो यह प्रयोग करके देखना। अच्छा रिज़ल्ट आएगा।

पढ़ाई से पहले की प्रार्थना

Click Here:

<https://kids.dadabhagwan.org/knowledge-house/book-world/Hindi/prathana/>

21 Akram Express



एक्सपेरिमेंट ५

चेतावनी: कृपया यह एक्सपेरिमेंट पेरेन्ट्स की उपस्थिति में ही करें।

आवश्यक सामग्री :

- एक छोटी मोमबत्ती
- मैचस्टिक
- बेकिंग सोडा - १-२ चम्मच
- विनेगर - ५० द्रव्य ml
- एक ग्लास
- एक छोटी थाली

प्रक्रिया :

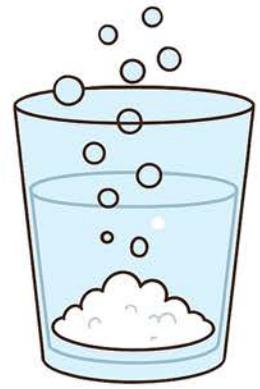


1. मोमबत्ती को एक छोटी थाली में रखकर जलाएँ।

2. एक ग्लास में बेकिंग सोडा डालें। अब ग्लास में धीरे-धीरे विनेगर डालें।



5. ग्लास में कार्बन
डाइऑक्साइड (CO₂) गैस
बनेगी।



4. ग्लास को मोमबत्ती के
पास लाएँ और थोड़ा तिरछा
करें।

अवलोकन :



मोमबत्ती की लौ को क्या हुआ?

कि निजर्मा र्पाड रिग्णाड र्हाड सि र्म स्राल र्पाड CO₂ : हावत
।रिर्ग र्पाडु कि रि

अक्रम साइन्स

कहता है कि :



मान लो कि,

- मोमबत्ती - हम
- मोमबत्ती की लौ - हमारा गुस्सा
- बेकिंग सोडा और विनेगर का मिक्सचर - प्रतिक्रमण

कई बार हमें अपने आस-पास के लोगों पर गुस्सा आता है। गुस्सा यानी मोमबत्ती की लौ। ऐसा लगता है जैसे अंदर कुछ जल रहा हो। अगर हम गुस्से की फायर पर प्रतिक्रमण रूपी fire extinguisher (आग बुझाने का यंत्र) का प्रयोग करें तो आग तुरंत ही बुझ जाएगी।



तो अब हम यह आग बुझाने का यंत्र अपने साथ रखेंगे। ताकि हम भी न जलें और हमारे आस-पास भी किसी को न जलाएँ।

गुस्सा कितने प्रकार का?

गुस्सा तीन प्रकार से हो सकता है।
मन से, वाणी से और वर्तन से।

मन से गुस्सा यानी क्या?

तुम्हारे मार्क्स बहुत कम
आए हैं। इतना एक्स्ट्रा
होमवर्क करके आना।

कैसे हैं ये! जब देखो
तब हमवर्क ही देते
रहते हैं।



वाणी से क्रोध यानी क्या?

तुम्हें मोबाइल चलाते हुए
पंद्रह मिनट पूरे हो गए
हैं। अब फोन रख दो।

नहीं! सब लोग एक-एक घंटे
तक खेलते हैं। आप ही मुझे
मना करते रहते हो।



वर्तन से गुस्सा यानी क्या?

तुमने मुझ पर पानी डाला
ही क्यों? मेरे सारे कपड़े
भीग गए!

तुम्हारा धक्का
लगा इसलिए
गलती से गिर
गया।



प्रतिक्रमण

करने का तरीका



जब सामने वाले व्यक्ति को हमारे गुस्से से दुःख हो जाता है तो उनके अंदर बैठे हुए भगवान को अथवा दादा भगवान को याद करके इस तरह प्रतिक्रमण करें।

हे दादा भगवान! (अथवा जिस भगवान को मानते हो उन्हें याद करें) मुझसे यह गलती हो गई। इस व्यक्ति पर गुस्सा हो गया। इसलिए क्षमा माँगता हूँ। पछतावा करता हूँ। ऐसी गलती दोबारा नहीं करूँगा।

प्रतिक्रमण मीटर



तारीख	आज मुझसे किसे दुःख हुआ/किस पर गुस्सा किया?	क्या मैंने उसका प्रतिक्रमण किया?
1		
2		
3		

AALOO CHILLY



अब तक की आलू-चिली की कहानियाँ एक साथ पढ़ने के लिए...

Click Here : <https://dbf.adalaj.org/TdY6ZhXI>

आलू के साथ फ्रेंडशिप तोड़कर चिली रोते-रोते चला जाता है। तब आलू अपनी और चिली की बचपन की बातें पार्सली को बताता है। बचपन में आलू का कलर अलग होने के कारण सभी उसे 'रंगीन रोटलुं' कहकर चिढ़ाते थे। जब आलू ने पहली बार स्केटिंग ट्राइ की तो सबने उसे बहुत चिढ़ाया। इसलिए वह दुःखी होकर तालाब पर चला गया। अब आगे...



मैं तालाब के किनारे बैठा था। पानी में अपनी परछाई देखकर सोच रहा था कि काश मैं भी सबकी तरह दिखता! तो मेरे साथ ऐसा नहीं होता। तभी मुझे एक आवाज़ सुनाई दी, 'ए मोटे, मुझे पहचाना? मैं चिली...' मैंने देखा चिली पानी में उल्टा होकर मस्ती कर रहा था। कई साल पहले जब जंगल में आग लगी थी, तब चिली के साथ मेरी पहचान हुई थी। लेकिन मैं उसे ज्यादा नहीं जानता था। लेकिन उस दिन तालाब पर उसने मुझे इस तरह बुलाया मानों हमारी बहुत पुरानी जान-पहचान हो।



वह मुझे कहने लगा, 'मैं बड़ा होकर महान सिंगर बनूँगा और पूरा जंगल मेरा ऑटोग्राफ लेने आएगा। अगर तुम्हें चाहिए तो बता दो। मैं अभी तुम्हें दे दूँगा।'

मैंने बिना सोचे-समझे उसे अपना नोट दे दिया। फिर वह कहने लगा, 'मोटे, पहले अपना नाम तो बताओ!' तो मेरे मुँह से निकल गया,

‘रंगीन रोटलुं।’ तो वह जोर-जोर से हँसने लगा और बोला, ‘यह कैसा नाम है? तुम रंगीन रोटलुं कैसे हो सकते हो? तुमसे ज्यादा रंगीन तो मैं हूँ। तुम रंगीन रोटलुं, तो मैं रंगीन (छोतरुं) छिलका।’ अब एक तोता भी मेरा मज़ाक उड़ा रहा है! यह सोचकर मेरा मुँह लटक गया।



मेरा चेहरा देखकर वह आकर सीधे मेरे कंधे पर बैठ गया और कहने लगा, ‘देखो आलू, तुम चिंता मत करो। तुम स्केटिंग करो। तुम्हें कोई परेशान करेगा तो मैं उसे देख लूँगा।’ मैंने उससे पूछा कि ‘तुम्हें मेरा नाम कैसे पता है?’ तो उसने कहा, ‘मुझे सब पता रहता है। तुम भी रंगीन, मैं भी रंगीन। क्या तुम मेरे बेस्ट फ्रेंड बनोगे?’ बेस्ट फ्रेंड? पूरे जंगल में मेरा कोई फ्रेंड नहीं था और यह चिली तो सीधा मेरा बेस्ट फ्रेंड बनने को तैयार हो गया!

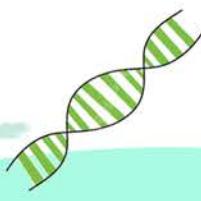
दूसरे दिन चिली मुझे जबरदस्ती स्केटिंग करने ले गया और मुझसे कहा, ‘देखो आलू, तुम मेरे बेस्ट फ्रेंड हो। इसलिए मैं तुम्हें एक सिक्रेट

बताता हूँ। अगर आज तुम्हें कोई चिढ़ाए न तो तुम एक बड़ी स्माइल देना और अगर कोई तुम्हें परेशान करेगा तो मैं उसे देख लूँगा।' मुझे लगा, इतना छोटा बच्चा इतने बड़े-बड़े हाथी के बच्चों को कैसे देखेगा? मैंने कहा, 'लेकिन...' तो वह बीच में बोल पड़ा, 'अरे रे, तुम्हें स्माइल देना भी नहीं आता? रुको, मैं सिखाता हूँ', ऐसा कहकर उसने मुझे एक बड़ी सी स्माइल दी।



वो कार्टून जैसा लग रहा था, उसे देखकर मुझे हँसी आ गई। तो उसने मुझसे कहा, 'अरे आलू! तुम्हें तो स्माइल करना आ गया। चलो बाइ...' कहकर वह उड़ गया।

आलू स्केटिंग रिंग पर आ तो गया लेकिन जब हाथी के बच्चे आकर उसे चिढ़ाएँगे, तो चिली के कहे अनुसार आलू स्माइल कर पाएगा? इतना छोटा चिली, हाथी के बच्चों से कैसे लड़ेगा?



WELCOME TO AKRAM LAB

यह कोई साधारण लैब नहीं है। यहाँ मजेदार वैज्ञानिक प्रयोग हमें जीवन जीने के मूल्य सीखाते हैं। क्या आप जानना चाहते हैं कि वैज्ञानिक प्रयोगों के ज़रिए फ्रेंडशिप, माफी माँगना, खुश रहना और अच्छी तरह से पढ़ाई करना कैसे सीख सकते हैं? तो अपना लैब-कोट पहनकर वैज्ञानिक बन जाओ और खुद खोज करके सीखने के लिए तैयार हो जाओ।

